

Central Water Commission
Technical Documentation Directorate
Bhagirath(English)& Publicity Section

West Block II, Wing No-5
R K Puram, New Delhi – 66.

Dated 21.1.2019.

Subject: Submission of News Clippings.

The News Clippings on Water Resources Development and allied subjects are enclosed for perusal of the Chairman, CWC, and Member (WP&P/D&R/RM), Central Water Commission. The soft copies of clippings will be uploaded on the CWC website.

J. Mahesh ^{om}
21.1.2019
SPA (Publicity)

Encl: As stated above.

0/c

Deputy Director, WSE Dte.

21/01/2019

Director, WSE Dte.

21/01/19

For information to

Chairman CWC, New Delhi

Member (WP&P/D&R/R.M.), CWC and all concerned, uploaded at www.cwc.nic.in

Hindustan Times
Statesman ✓
The Time of India (New Delhi)
Indian Express
Tribune

Hindustan (Hindi)
Nav Bharat Times (Hindi)
Punjab Keshari (Hindi)
The Hindu (New Delhi)
Rajasthan Patrika (Hindi)

Deccan Chronicle
Deccan Herald
The Times of India (A)
Business standard
The Economic Times

and documented at Bhagirath (English) & Publicity Section, CWC

Novel tech cleans water using bacteria

87-21
IANS

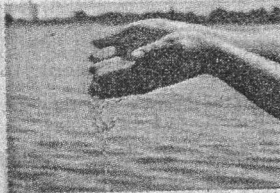
NEW YORK, 20 JANUARY

Researchers, led by one of Indian-origin, have developed a new technology that can clean water twice as fast as commercially available ultrafiltration membranes, an advance that brings hope for countries like India where clean drinking water is a big issue.

According to a team from the Washington University in St. Louis, more than one in 10 people in the world lack basic drinking water access, and by 2025, half of the world's population will be living in water-stressed areas.

The team led by Srikanth Singamaneni, Professor at the varsity, developed an ultrafiltration membrane using graphene oxide and bacterial nanocellulose that they found to be highly efficient, long-lasting and environment-friendly. The membrane technology purifies water while preventing biofouling, or build up of bacteria and other harmful micro-organisms that reduce the flow of water.

For the study, published in



the journal Environmental Science and Technology, they used bacteria to build such filtering membranes.

The *Gluconacetobacter hansenii* bacteria is a sugary substance that forms cellulose nanofibres when in water.

The team then incorporated graphene oxide (GO) flakes into the bacterial nanocellulose while it was growing, essentially trapping GO in the membrane to make it stable and durable.

They exposed the membrane to *E. coli* bacteria, then shone light on the membrane's surface.

After being irradiated with light for just three minutes, the *E. coli* bacteria died. The team determined that the membrane quickly heated to above the 70 degrees Celsius required

to deteriorate the cell walls of *E. coli* bacteria.

While the bacteria are killed, the researchers had a pristine membrane with a high quality of nanocellulose fibres that was able to filter water twice as fast as commercially available ultrafiltration membranes under a high operating pressure.

When they did the same experiment on a membrane made from bacterial nanocellulose without the reduced GO, the *E. coli* bacteria stayed alive. While the researchers acknowledge that implementing this process in conventional reverse osmosis systems is taxing, they propose a spiral-wound module system, similar to a roll of towels.

It could be equipped with LEDs or a type of nanogenerator that harnesses mechanical energy from the fluid flow to produce light and heat, which would reduce the overall cost. If the technique were to be scaled up to a large size, it could benefit many developing countries where clean water is scarce, the researchers noted.

Hindustan Times
Statesman
The Times of India (N.D.)
Indian Express
Tribune
Hindustan (Hindi)

Nav Bharat Times (Hindi)
Punjab Keshari (Hindi)
The Hindu
Rajasthan Patrika (Hindi)
Deccan Chronicle
Deccan Herald

M.P.Chronicle
A a j (Hindi)
Indian Nation
Nai Duniya (Hindi)
The Times of India (A)
Blitz

and documented at Bhagirath(English)& Publicity Section, CWC.

मैदानी क्षेत्रों में आगे बढ़ते ही गुण खोने लगती है गंगा

गंगाजल में जीवाणुओं से निपटने की बेहतर क्षमता

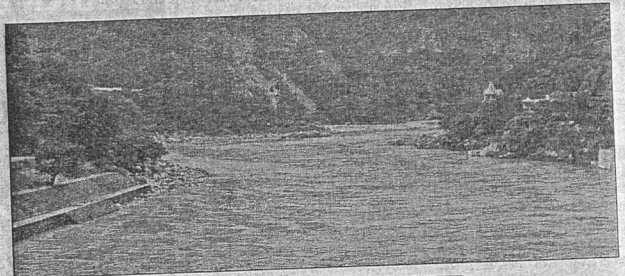
रिपोर्ट

नई दिल्ली | मदन जैड़ा

सीएसआईआर - नीरी के वैज्ञानिकों ने दावा किया कि गंगाजल में ऐसी जैविक संपदाएं हैं, जो उसे स्वतः स्वच्छ बनाए रखती हैं। लेकिन, पहाड़ों से निकलकर जैसे-जैसे गंगा मैदानी क्षेत्रों में बढ़ती है, उसका यह गुण खत्म होने लगता है। इस वजह गंगा में बड़े पैमाने पर मिलने वाला प्रदूषण है। यदि गंगा साफ हो जाए तो उसके पानी की यह खूबी गंगासागर तक कायम रह सकती है।

करीब दो साल पूर्व 'नमामि गंगे परियोजना' के तहत गंगाजल की गुणवत्ता परखने का भी निर्णय लिया गया था। यह जानने की कोशिश की गई कि गंगाजल की शुद्धता क्या सिर्फ लोगों की आस्था का विषय है या वास्तव में उसमें ऐसे गुण मौजूद हैं। इस कार्य का जिम्मा सीएसआईआर की नागपुर स्थित प्रयोगशाला नेशनल एंवायरमेंटल इंजीनियरिंग रिसर्च इंस्टीट्यूट (नीरी) को दिया गया।

हाल में नीरी ने अपने अध्ययन के आरंभिक नतीजे नमामि गंगे मुख्यालय



वैज्ञानिक पुष्टि

नमामि गंगा के महानिदेशक राजीव रंजन मिश्रा ने हिन्दुस्तान को बताया कि नीरी की रिपोर्ट गंगा जल में स्वतः शुद्ध होने की क्षमता की वैज्ञानिक पुष्टि करती है। यह सिर्फ आस्था का प्रश्न नहीं रह गया है।

● जब गंगा उत्तराखंड के पहाड़ों से निकलती है, तो उसमें कई जैविक तत्व मिल जाते हैं। बैक्टीरियोफाज की बड़ी संख्या उनमें मौजूद रहती है।

● बैक्टीरियोफाज ऐसा विषाणु है, जो पानी को नुकसान करने वाले जीवाणुओं को नष्ट करता है। इससे पानी की शुद्धता बनी रहती है।

हरिद्वार से आगे मिलता है प्रदूषण

वैज्ञानिकों ने गोमुख से गंगासागर तक गंगा जल के सैपल जांचे। हरिद्वार तक बैक्टीरियोफाज की संख्या गंगाजल में काफी पाई गई है। इसके बाद संख्या घटने लगती है।

को सौंपे हैं। हालांकि, उसका विस्तृत अध्ययन जारी है ताकि उसके नतीजों को दुनिया में कहीं चुनौती न दी जा सके।

अन्य नदियों के जल का परीक्षण : मिश्रा के अनुसार वैज्ञानिकों ने दूसरी

नदियों में भी इनकी जांच की है। यमुना एवं नर्मदा नदियों में भी इनकी मौजूदगी मिली है, लेकिन गंगा की तुलना में यह संख्या बहुत कम है। यह आरंभिक रिपोर्ट सिद्ध करती है कि गंगा जल में जीवाणुओं से निपटने की क्षमता है।

News item/letter/article/editorial published on 21/1/2019 in the

Hindustan Times

Statesman

The Times of India (N.D.)

Indian Express

Tribune

Hindustan (Hindi)

Nav Bharat Times (Hindi)

Punjab Keshari (Hindi)

The Hindu

Rajasthan Patrika (Hindi)

Deccan Chronicle

Deccan Herald

M.P.Chronicle

A a j (Hindi)

Indian Nation

Nai Duniya (Hindi)

The Times of India (A)

Blitz

and documented at Bhagirath(English)& Publicity Section, CWC.

Dainik Bhaskar, New Delhi

मेघालय: देश की सबसे साफ नदी उमनगोत, जहां बोट शीशे पर तैरती दिखती है

सबसे पॉजिटिव तस्वीर...

यह नदी एशिया के सबसे साफ गांव मावलिननॉंग के पास है

शिलांग। यह तस्वीर पूरब का स्कॉटलैंड कहे जाने वाले मेघालय की उमनगोत नदी की है। इसे देश की सबसे साफ नदी का रुतबा हासिल है। पानी इतना साफ है कि नावें कांच पर तैरती सी नजर आती हैं। यह शिलांग से 85 किमी दूर भारत-बांग्लादेश सीमा के पास पूर्वी जयंतिया हिल्स जिले के दावकी कस्बे के बीच से बहती है। लोग इसे पहाड़ियों में छिपा स्वर्ग भी कहते हैं। इस सफाई की वजह यहां रहने वाले खासी आदिवासी समुदायों की पुरखों से चली आ रही परंपराएं हैं। सफाई इनके संस्कारों में है, बुजुर्ग जिसकी निगरानी करते हैं। उमनगोत तीन गांवों में से बहती है- दावकी, दांग और शेनानाडेंग। इन्हीं गांवों के लोगों के जन्मे इसकी सफाई है। मौसम और पर्यटकों की संख्या के हिसाब से महीने में एक, दो या चार दिन कम्युनिटी डे के होते हैं। इस दिन गांव के हर घर से कम से कम एक व्यक्ति नदी को सफाई के लिए आता है। गांव में करीब 300 घर हैं और सभी मिलकर सफाई करते हैं। गंदगी फैलाने पर 5000 रु. तक जुर्माना वसूला जाता है। नवंबर से अप्रैल तक सबसे अधिक पर्यटक आते हैं। मानसून में बोटिंग बंद रहती है। उमनगोत के पास के गांव मावलिननॉंग को एशिया के सबसे साफ गांव का दर्जा हासिल है।

कंटेन और फोटो: वेनेटे लुकस पोहती



Hindustan Times
Statesman
The Times of India (N.D.)
Indian Express
Tribune
Hindustan (Hindi)

Nav Bharat Times (Hindi)
Punjab Keshari (Hindi)
The Hindu
Rajasthan Patrika (Hindi)
Deccan Chronicle
Deccan Herald

M.P.Chronicle
A a j (Hindi)
Indian Nation
Nai Duniya (Hindi)
The Times of India (A)
Blitz

and documented at Bhagirath(English)& Publicity Section, CWC.

Dainik Jagran,

हरियाणा से प्रयागराज तक मिला सरस्वती का रास्ता

पंकज आग्नेय • कुरुक्षेत्र

प्रयाग में गंगा, यमुना और सरस्वती का संगम है। माना जाता है कि सरस्वती काल्पनिक नदी है। वह प्रयाग कभी नहीं पहुंची। भूचाल आने के कारण जमीन ऊपर खड़ी तो सरस्वती का पानी यमुना में गिर गया और दोनों का जल प्रवाहित होने लगा, लेकिन कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के सेंटर ऑफ एक्सीलेंस ऑन रिसर्च ऑफ सरस्वती रिवर ने इस धारणा को गलत साबित किया है। उसने एक पैलियो चैनल (नदी की पुरानी शाखा) खोज निकाला है, जो आदि बंदी (हरियाणा के यमुनानगर में स्थित) से सरस्वती को सीधे प्रयागराज तक जोड़ता है।

अहम बात यह है कि इस चैनल में सरस्वती अपनी ही धारा में संगम तक पहुंचती दिखाई दे रही है। सेंटर के निदेशक प्रो. एआर चौधरी ने सेटेलाइट से रिमोट सेंसिंग के जरिये मिले चित्रों से यह पैलियो चैनल खोजा है। उन्होंने बताया कि सरस्वती न तो गंगा में मिली और न ही यमुना में, बल्कि उत्तर प्रदेश में एक जगह जाकर यह यमुना नदी को पार करते हुए गंगा और यमुना के बीच में पहुंची और वहां से तीनों एक साथ प्रयाग में संगम में मिली। बता दें कि प्रो. चौधरी करीब दो



प्रोफेसर एआर चौधरी

**इसलिए
महत्वपूर्ण
है शोध**

दशक से सरस्वती नदी पर शोध कर रहे हैं। हाल ही में सरकार की ओर से कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में स्थापित शोध केंद्र के निदेशक हैं।

प्रो. चौधरी के मुताबिक, यमुनानगर के आदि बंदी से सरस्वती दो धाराओं में आगे बढ़ी। एक कुरुक्षेत्र से होकर राजस्थान, उत्तर प्रदेश और नीचे प्रयाग तक पहुंची और दूसरा, दृष्टवती के रूप में करनाल, रोहतक के महम के पास से होकर राजस्थान और उत्तर प्रदेश से प्रयाग तक। सेटेलाइट से मिला नया पैलियो चैनल आदि बंदी से करनाल होते हुए महम के पास पहुंचता है और वहां से राजस्थान के चूरु जिले के पास से होते हुए उत्तर

अब की जाएगी सभ्यता की भी खोज

प्रो. एआर चौधरी ने कहा कि कोई भी नदी हो, उसके किनारों पर एक सभ्यता रही है। इस पैलियो चैनल के आसपास भी एक सभ्यता का पता चलता है। इसे अब खोजा जाएगा। हरियाणा में तो सरस्वती के आसपास की सभ्यता जाहिर है, अब राजस्थान और उत्तर प्रदेश में काम करने की जरूरत है।

प्रयाग में इन दिनों कुंभ चल रहा है। मान्यता है कि यहां गंगा, यमुना और सरस्वती का संगम होता है, लेकिन साथ ही यह भी धारणा है कि सरस्वती का पानी यमुना में मिलकर ही संगम में मिलता है। कुवि के शोध केंद्र ने इसे गलत साबित किया है।

प्रदेश के मैनपुरी से सटकर निकल रहा है। यहां से नीचे होते हुए संगम में जाकर मिलता है।

जारी है शोध कार्य : सरस्वती नदी पर सालों से शोध जारी है। सर्वे ऑफ इंडिया की ओर से 1965-66 में जारी की गई टोपोग्राफी में यमुनानगर के मुगलांबाली से सरस्वती नदी प्रवाहित दिखाई गई है। इसका उद्गम स्थल आदि बंदी से मिला। सेटेलाइट से खोजे गए पैलियो चैनल के रेत के सैंपल लिए गए हैं, उन्हें सरस्वती के उद्गम से मिलान किया तो मेल खा गए। साथ ही ग्रंथों में वर्णित सरस्वती नदी से जुड़े स्थानों पर खोदाई की गई। वहां के सैंपल भी मेल खा गए।

News item/letter/article/editorial published on 20.1.2019 in the

Hindustan Times
Statesman
The Times of India (N.D.)
Indian Express
Tribune
Hindustan (Hindi)

Nav Bharat Times (Hindi)
Punjab Keshari (Hindi)
The Hindu
Rajasthan Patrika (Hindi)
Deccan Chronicle
Deccan Herald

M.P.Chronicle
Aaj (Hindi)
Indian Nation
Nai Duniya (Hindi)
The Times of India (A)
Blitz

and documented at Bhagirath(English)& Publicity Section, CWC.

Perspective

Urban sewage blight keeps Ganges dirty

MILLEDGE
OSH BUNCE

The Ganges is a lifeline for millions of people who live within its catchment as a source of water, transport and food. During the Hindu pilgrimage known as the Kumbh Mela the Ganges plays host to the largest human gathering on Earth with 10 million people arrive to bathe in the river over 49 days.

Despite its tremendous spiritual significance, the Ganges is also notorious for having some of the most polluted water in the world. For 79 per cent of the population of the Ganges basin, their nearest river fails to meet pollution standards for crop irrigation. Some 85 per cent of the population live near water that isn't safe for drinking and Allahabad – where the Kumbh Mela takes place in 2019 – is one of those places.

Our own research suggests that as the number of people living in nearby cities increases, the problem with water quality in the Ganges worsens. Urban populations in the Ganges basin contribute around 100 times more microbial pollution per person to the river than their rural counterparts. This means that untreated sewage discharged from a sewer system is worse for river water quality than raw sewage discharge where there are no sewers at all.

When we examined 10 years of water quality data we found that the concentration of faecal coliforms – a common pollution indicator found in human faeces – increased when the density of people living upstream increased. This makes sense: more people means more poo.

But we also found that people living in cities in India contribute more pollution per person than those in rural areas – how much more depends on the population density. A person living in an area in India with 1,000 people per square kilometre contributes 100 times more pollution to the river than a person living in a rural area with 10 people per square kilometre.

nearest river than they would in an area with 100 people per square kilometre – say, rural Devon in the UK.

So why does it appear that a person living in an Indian city produces more sewage pollution than someone living in the countryside?

Of course, people in the cities are unlikely to actually contribute significantly more faeces than those in rural communities. Instead, it's probably sewers that are to blame. In cities, extensive sewage networks efficiently flush sewage to the river, whereas in rural areas more people defecate in the open or in pit latrines. This means faecal pollution is more likely to be washed into the river than in rural areas.

to die in situ.

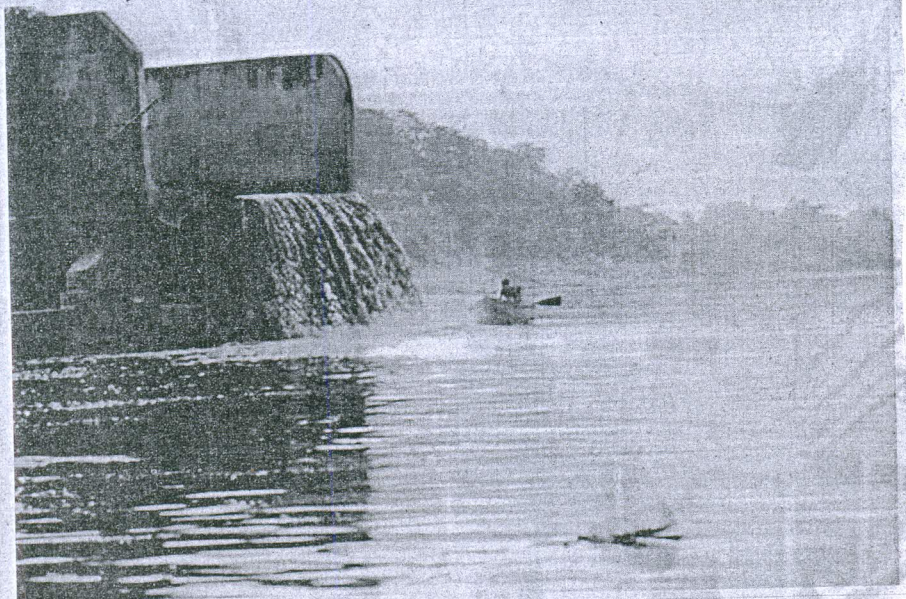
As the population density of a place increases, sewers become more common. Sewage removal is essential for the protection of public health, but without effective treatment, as is typically the case in the Ganges catchment, it comes at the cost of increased river pollution and waterborne diseases for people living downstream.

It's therefore clear that water quality in the Ganges is a more complex and widespread problem than previously thought. We'd expected that cities, with their more advanced sewage management, would be better

than rural areas. The urgency to invest, not only in sewers, but in the treatment of sewage has never been greater – especially in the most densely populated areas. However, the Western approach of taking all waste to a central treatment plant is expensive and so may not be the best solution.

Onsite treatment technologies such as off-grid toilets or decentralised treatment plants are rapidly developing and may help improve river water quality sooner, enabling more and more people to celebrate Kumbh Mela safely.

The writers are researchers at the Department of Civil Engineering, Imperial College London.



News item/letter/article/editorial published on 20.01.2019 in the

Hindustan Times ✓
Statesman
The Times of India (N.D.)
Indian Express
Tribune
Hindustan (Hindi)

Nav Bharat Times (Hindi)
Punjab Keshari (Hindi)
The Hindu
Rajasthan Patrika (Hindi)
Deccan Chronicle
Deccan Herald

M.P.Chronicle
A a j (Hindi)
Indian Nation
Nai Duniya (Hindi)
The Times of India (A)
Blitz


and documented at Bhagirath(English)& Publicity Section, CWC.

Pollute Yamuna, face action, says chief secretary

NEW DELHI: In a bid to stop waste from flowing into the Yamuna, the Delhi Jal Board has said it would fix responsibility of officials.

"Responsibility of officials would be fixed in whose stretch solid waste finds its way into the drains and ultimately into the river," said Vijay Kumar Dev, chief secretary of Delhi.

He was speaking at a seminar organised by the water utility to raise public awareness on mechanised and eco-friendly ways of sewage septage disposal and solid waste management on Friday.

 Responsibility of
officials would be
fixed in whose stretch solid
waste is poured into the
drains and the river

VIJAY DEV, chief secretary of Delhi

Hindustan Times
Statesman
The Times of India (N.D.) ✓
Indian Express
Tribune
Hindustan (Hindi)

Nav Bharat Times (Hindi)
Punjab Keshari (Hindi)
The Hindu
Rajasthan Patrika (Hindi)
Deccan Chronicle
Deccan Herald

M.P.Chronicle
Aaj (Hindi)
Indian Nation
Nai Duniya (Hindi)
The Times of India (A)
Blitz

Rain & hailstorms likely next week, temperature set to fall

At 25.9°C, Sat
Was 2019's
Warmest Day

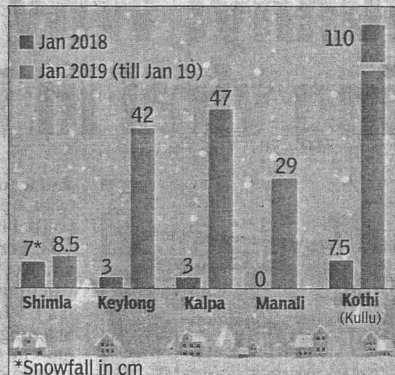
TIMES NEWS NETWORK

New Delhi: The mercury climbed to 25.9°C on Saturday — six notches above the average — making it the warmest day the capital experienced in 2019.

The rise in temperature was due to a western disturbance, a Met department official said. Rain is likely on Monday and Tuesday after which the maximum temperature will drop to 19-20°C. Isolated parts of the capital may also witness hailstorms. The minimum which was recorded at 5.7°C — one notch lower than normal — on Saturday, is likely to rise to around 11°C on Monday.

A blanket of moderate to dense fog enveloped the city

'WHITE JANUARY' IN HILLS



- After several years, western Himalayas getting good snowfall this month
- At least 6 snow-bearing western disturbances this January against normal of 4-5
- Good snowfall is key for water availability in north India in summer
- Very dry January last year led to water scarcity and high incidence of forest fires

“ If we get two-three more snow spells in February and March, water discharge in Himalayan rivers will remain good till peak summer

—D P Dobhal | Glaciologist, Wadia Institute of Himalayan Geology, Dehradun

DETAILS: P15

on Saturday, though there was no major disruption in flight operations at IGI airport, barring a few delays.

On Friday, 500 flights had been delayed because of thick fog and airspace restrictions put in place due to Republic Day rehearsals.

The IMD forecast shows that fog density will reduce

further, mainly because of the likelihood of the rain and hailstorm. Ministry of earth science wing SAFAR says moderate foggy conditions may prevail for the next two days over Delhi and its surrounding regions, and the situation may not see significant improvement.

Meanwhile, the capital's

air quality was classified as “very poor” on Saturday with an AQI (air quality index) of 378. “The air quality will improve a few notches by Sunday as increased wind speed will disperse pollutants faster compared to their accumulation due to colder conditions and fog,” SAFAR said in its forecast.

Western disturbance to bring in hail, thunderstorms to N India tomorrow

Amit Bhattacharya
@timesgroup.com

New Delhi: Intense back-to-back wet weather systems are set to sweep into north India, bringing widespread rain across the region on Monday and Tuesday, along with heavy showers, hail and thunderstorms as well as gusty winds in some areas.

Apart from heavy snowfall in the hills, the wet weather is expected to affect Delhi, Punjab, Haryana, Chandigarh and Uttar Pradesh, the Met office said. The plains could also see winds gusting up to 25-30kmph.

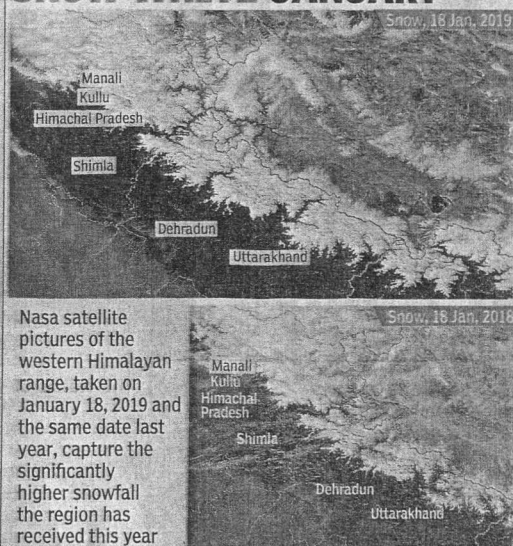
There is also a possibility of thunderstorms with isolated hailstorms hitting Allahabad, where the Kumbh Mela is on, during these two days, Met officials warned.

The wet spell is being caused by an intense western disturbance (WD) that is expected to draw moisture both

from the Arabian Sea and the Bay of Bengal. “The position of the disturbance is more southward than usual and it is likely to cause an induced cyclonic circulation over west Rajasthan, extending vertically up to 1.5km. It will draw moisture both from the Arabian Sea and Bay of Bengal. The places where the two winds interact are likely to see thunderstorms,” said B P Yadav, head of the regional meteorological centre.

Yadav said there's a possibility of heavy showers of up to 50mm at some places with the system expected to bring well-distributed rainfall up to Madhya Pradesh. “Immediately, thereafter, another WD is set to hit north India from January 24 to 26. But its impact is likely to be moderate, although light rain may occur at many places in the plains,” the official said.

SNOW WHITE JANUARY



Picture credit: Nasa

News item/letter/article/editorial published on 20.01.2019 in the

Hindustan Times

Statesman

The Times of India (N.D.)

Indian Express

Tribune

Hindustan (Hindi)

Nav Bharat Times (Hindi)

Punjab Keshari (Hindi) ✓

The Hindu

Rajasthan Patrika (Hindi)

Deccan Chronicle

Deccan Herald

M.P.Chronicle

A a j (Hindi)

Indian Nation

Nai Duniya (Hindi)

The Times of India (A)

Blitz

and documented at Bhagirath(English)& Publicity Section, CWC.

अगले साल मार्च तक गंगा शत प्रतिशत साफ हो जाएगी : गडकरी

नागपुर, (भाषा) : केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी ने शनिवार को कहा कि मार्च 2020 तक गंगा शत प्रतिशत साफ हो जाएगी। गडकरी ने यहां भाजपा की अनुसूचित जाति (एससी) मोर्चा की एक सभा को संबोधित करते हुए यह कहा। उन्होंने कहा कि गंगा साफ होनी शुरू हो गई है। इस साल मार्च तक 30 - 40 प्रतिशत काम पूरा हो जाएगा और अगले साल मार्च तक गंगा शत प्रतिशत साफ हो जाएगी। केंद्रीय मंत्री ने कहा

कि गंगा की सफाई के लिए किए गए कार्य का रिकार्ड वह जिलावार, राज्यवार और परियोजनावार दे सकते हैं। उन्होंने कहा कि न सिर्फ गंगा बल्कि हम इसकी 40 सहायक नदियों की भी सफाई करने पर काम कर रहे हैं। यमुना की सफाई के लिए 800 करोड़ रुपये की परियोजनाएं जारी हैं। गडकरी ने कहा कि गंगा की अविरलता के लिए उसमें 20 फीसदी अधिक जल छोड़ा गया है।

Hindustan Times
Statesman
The Times of India (N.D.)
Indian Express
Tribune
Hindustan (Hindi) ✓

Nav Bharat Times (Hindi)
Punjab Keshari (Hindi)
The Hindu
Rajasthan Patrika (Hindi)
Deccan Chronicle
Deccan Herald

M.P.Chronicle
Aaj (Hindi)
Indian Nation
Nai Duniya (Hindi)
The Times of India (A)
Blitz

and documented at Bhagirath(English)& Publicity Section, CWC.

जल संसाधन मंत्रालय को कई शिकायतें मिली, कंपनियों से तीन वर्ष में एक करोड़ का राजस्व भी नहीं मिला

गंगाजल के कारोबार पर कानून बनेगा

सख्ती

नई दिल्ली | रामनारायण श्रीवास्तव

गंगाजल को बोटलबंद मिनरल पेयजल के रूप में बेचकर करोड़ों का कारोबार कर रही कंपनियों के लिए जल्द ही सख्त नियम-कानून बनाए जा सकते हैं। जल संसाधन मंत्रालय को इस कारोबार के बारे में कई शिकायतें मिली हैं, जिन पर वह विचार कर रहा है। हालांकि जल राज्य का विषय है और इन कंपनियों पर अन्य मंत्रालयों का नियंत्रण है इसलिए जल संसाधन मंत्रालय सीधे कुछ नहीं कर सकता।

देश में बीते दो दशक में बोटलबंद पेयजल उद्योग तेजी से फैला है। इसके लिए कंपनियां प्रायः भूजल का इस्तेमाल

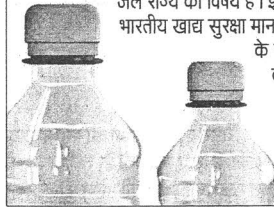
कर रही हैं, जिसके लिए कई तरह के दिशा-निर्देश बने हुए हैं। लेकिन नदियों से, खासकर गंगा नदी से पानी सीधे लेकर उसको व्यावसायिक रूप से बेचने को लेकर स्पष्ट दिशा-निर्देश नहीं हैं।

इस स्थिति में कंपनियां अगर सरकार को कुछ कर देती भी हैं तो वह उनकी कमाई के मुकाबले नगण्य है। गौरतलब है कि सरकार को इन कंपनियों से साल 2014-15 में महज 31 लाख रुपये, 2015-16 में 26 लाख रुपये और 2016-17 में 30 लाख रुपये राजस्व ही मिले थे।

नमामि गंगे में कोई योगदान नहीं : नमामि गंगे अभियान के बाद गंगा नदी को लेकर जागरूकता बढ़ी। ऐसे में गंगा जल को बोटलबंद पेयजल के रूप में बेचकर करोड़ों का कारोबार कर रही

राज्यों से लेकर कई मंत्रालयों में बंटा है गुद्दा

बीते साल जल संसाधन से जुड़ी संसद की स्थायी समिति के सामने भी यह गुद्दा आया था। समिति ने मंत्रालय से कई सवाल पूछे थे। इस पर मंत्रालय ने कहा था कि जल राज्य का विषय है। इसके अलावा भारतीय मानक ब्यूरो और भारतीय खाद्य सुरक्षा मानक प्राधिकरण बोटलबंद जल उद्योग व संयंत्रों के संबंध में प्रमाणित एजेंसी के रूप में काम कर रहे हैं। ऐसे उद्योगों के लिए लाइसेंस जारी करने पर आवश्यक प्रतिबंध भारतीय मानक ब्यूरो द्वारा लगाया जाना है। इसके अलावा संयोलन की सहमति राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड द्वारा प्रदान की जाती है।



कंपनियों पर भी ध्यान गया। लेकिन ये कंपनियां साफ-सफाई और नमामि गंगे अभियान के लिए एक पैसे का योगदान भी नहीं दे रही हैं। राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन के महानिदेशक राजीव रंजन मिश्रा ने कहा, मुझे इस बारे में कई

शिकायतें मेल पर मिली हैं। इस पर मंत्रालय विचार कर रहा है कि किस तरह से इसके लिए नियम-कानून बनाए जाएं। इस बारे में सभी संबंधित पक्षों के साथ समन्वय कर नियम-कानून बनाए जा सकते हैं।

‘गंगा की अविरलता को आंदोलन चलेगा’

हरिद्वार। नर्मदा बचाओ आंदोलन की नेता मेधा पाटकर ने कहा कि गंगा के संरक्षण के लिए संघर्ष कर रहे सभी छोटे-बड़े संगठनों को एक मंच पर आना होगा। गंगा को अविरल और निर्मल बनाने के लिए देशभर में बड़े स्तर पर आंदोलन चलाया जाएगा। उन्होंने जल्द ही दिल्ली के जंतर-मंतर में प्रदर्शन कर केंद्र सरकार से गंगा संरक्षण को लेकर जवाब-तलब करने की बात भी कही।

शनिवार को मातृसदन में आयोजित गंगा संरक्षण गोष्ठी के दौरान मेधा पाटकर के निशाने पर केंद्र सरकार रही।

Hindustan Times
Statesman
The Times of India (N.D.)
Indian Express
Tribune
Hindustan (Hindi)

Nav Bharat Times (Hindi)
Punjab Keshari (Hindi)
The Hindu
Rajasthan Patrika (Hindi)
Deccan Chronicle
Deccan Herald

M.P.Chronicle
A a j (Hindi)
Indian Nation
Nai Duniya (Hindi)
The Times of India (A)
Blitz

and documented at Bhagirath(English)& Publicity Section, CWC.

Dainik Jagran,

यमुना सफाई को सुधरेगी सेप्टेज व्यवस्था

राज्य व्यूरो, नई दिल्ली : यमुना की सफाई के लिए राजधानी में सेप्टेज व ड्रेनेज साफ सफाई व्यवस्था दुरुस्त होगी। इसके लिए दिल्ली जल बोर्ड के अलावा सभी संबंधित विभागों की जिम्मेदारी तय होगी। कार्य में लापरवाही पर संबंधित विभागों और अधिकारियों के खिलाफ कार्रवाई की जाएगी। जल बोर्ड के मुख्यालय में सेप्टेज प्रबंधन पर आयोजित कार्यशाला में यह बात सामने आई। सेप्टेज योजना के तहत क्षेत्रवास टैंक बनाया जाता है, वहां से वाहनों के जरिए ट्रीटमेंट प्लांट तक वाटर को पहुंचाया जाता है। इससे जमीन की कम जरूरत होती है और शहर छोटे छोटे टुकड़ों में बांट दिया जाता है। इसके अलावा यमुना सफाई को एनजीटी (नेशनल ग्रीन ट्रब्यूनल) द्वारा गठित निगरानी समिति वेबसाइट तैयार कर रही है। इससे भी यमुना में प्रदूषण की निगरानी होगी।

कार्यशाला में इसकी जानकारी देते हुए निगरान समिति की सदस्य शैलेजा चंद्रा ने कहा कि एक वेबसाइट तैयार की जा

रही है। यदि कहीं सीवरेज का गंदा पानी बिना शोधन के नालों में गिर रहा है, नदी-नालों में कहीं गंदगी है तो उसका फोटो वेबसाइट पर डाला जाएगा। साथ ही यह भी बताया जाएगा कि उसकी सफाई करने की जिम्मेदारी किस विभाग की है। संबंधित विभाग को जल्द सफाई सुनिश्चित करनी होगी। सीवरेज का पानी नदी व नालों में बिना शोधन के गिरते देख लोग भी उसका फोटो लेकर ई-मेल से भेज सकेंगे, जिसे वेबसाइट पर डाला जाएगा। इस कार्यशाला में दिल्ली के सभी जिलाधिकारी, एसडीएम, सहित सभी विभागों के अधिकारियों को बुलाया गया था। उन्हें सेप्टेज प्रबंधन की कार्ययोजना पर अमल करने का निर्देश दिया गया। कार्यशाला में मुख्य सचिव विजय देव भी शामिल हुए। उन्होंने सभी विभागों को अपनी जिम्मेदारी पर अमल सुनिश्चित करना होगा। उल्लेखनीय है कि अनाधिकृत कालोनियों में निजी टैंकर से लोग सेप्टिक टैंक की सफाई कराते हैं।